पाठ 9

जैसलमेर की राजकुमारी

(1)

राजकुमारी ने हँसकर कहा–''पिताजी! दुर्ग की चिंता न कीजिए। जब तक उसका एक भी पत्थर से पत्थर मिला है, उसकी मैं रक्षा करूँगी। चाहे अलाउद्दीन कितनी ही वीरता से हमारे दुर्ग पर आक्रमण करे, आप निर्भय होकर शत्रु से लोहा लें।''

यह जैसलमेर के दुर्गाधिपति महाराज रत्नसिंह की कन्या थी, इस समय बलिष्ठ अरबी घोड़े पर चढ़ी हुई थी और मर्दानी पोशाक पहने थी। उसकी कमर में दो तलवारें लटक रही थीं। कमरबंद में पेशकब्ज, पीठ पर तरकस और हाथ में धनुष था। वह चंचल घोड़े की रास को बलपूर्वक खींच रही थी, जो एक क्षण भी स्थिर रहना नहीं चाहता था। रत्नसिंह जिरहबख्तर पहने एक हाथी के फौलादी हौदे पर बैठे आक्रमण के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सामने उनके घोड़े हिनहिना रहे थे और शस्त्र झनझना रहे थे।

रत्नसिंह ने पुत्री के कंधे पर हाथ धर कर कहा–''बेटी, तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है, मैं दुर्ग को तुझे सौंपकर निश्चिंत हो रहा हूँ। देखना, सावधान रहना। शत्रु केवल वीर ही नहीं, धूर्त और छलिया भी है।''

बालिका ने वक्र दृष्टि से पिता को देखा और हँसकर कहा–''नहीं, पिताजी आप निश्चिंत होकर प्रस्थान करें। किले का बाल भी बाँका नहीं होगा।''

रत्नसिंह ने एक तीव्र दृष्टि अपने किले के धूप से चमकते हुए कँगूरे पर डाली और हाथी बढ़ाया। गगनभेदी जय निनाद से धरती आसमान काँप उठे। एक विशालकाय अजगर की भाँति सेना किले के फाटक से निकलकर पर्वत की उपत्यका में विलीन हो गई। इसके बाद घोर चीत्कार करके दुर्ग का फाटक बंद हो गया।

(2)

टिड्डी–दल की भाँति शत्रु ने दुर्ग घेर रखा था। सब प्रकार की रसद बाहर से आनी बंद थी। प्रतिदिन यवन दल गोली और तीरों की वर्षा करता था। पर जैसलमेर का अजेय दुर्ग गर्व से मस्तक उठाए खड़ा था। यवन समझ गए थे कि दुर्ग विजय करना हँसी–ठट्टा नहीं है। दुर्ग रक्षिणी, राज नंदिनी रत्नावती निर्भय अपने दुर्ग में सुरक्षित बैठी शत्रुओं के दाँत खट्टे कर रही थी। उसके साथ में पुराने विश्वस्त राजपूत वीर थे, जो मृत्यु और जीवन का खेल समझते थे। वह अपनी सखियों समेत दुर्ग के किसी बुर्ज पर चढ़ जाती और यवन सेना का ठट्टा उड़ाती हुई वहाँ से सनसनाते हुए तीरों की वर्षा करती। वह कहती–''मैं स्त्री हूँ, पर अबला नहीं। मुझमें मर्दों जैसा साहस और हिम्मत है। मेरी सहेलियाँ भी देखने भर की स्त्रियाँ हैं। मैं इन पापिष्ठ यवनों को समझती क्या हूँ।''

उसकी बातें सुन सहेलियाँ ठठाकर हँस देती थी। प्रबल यवनदल द्वारा आक्रांत दुर्ग में बैठना राजकुमारी के लिए एक विनोद था।

मलिक काफूर एक गुलाम था जो यवन सेना का अधिपति था। वह दृढ़ता और शांति से राजकुमारी की चोटें सह रहा था। उसने सोचा था कि जब किले में खाद्य पदार्थ कम हो जाएँगे, दुर्ग वश में आ जाएगा। फिर भी वह समय–समय पर दुर्ग पर आक्रमण कर देता था परन्तु दुर्ग की चट्टानों और भारी दीवारों को कोई क्षति नहीं पहुँचती थी। राजकुमारी बहुधा बुर्ज पर से कहती–''ये धूर्त, गर्द उड़ाकर तथा गोली बरसाकर मेरे किले को गंदा और मैला कर रहे हैं। इससे क्या लाभ होगा?

यवन दल ने एक बार दुर्ग पर प्रबल आक्रमण किया। राजकुमारी चुपचाप देखती रही। जब शत्रु आधी दूर तक दीवारों पर चढ़ आए तब भारी–भारी पत्थर के ढोंके और गर्म तेल की ऐसी मार पड़ी कि शत्रु सेना छिन्न–छिन्न हो गई। लोगों के मुँह झुलस गए, कितनों की चटनी बन गई। हज़ारों यवन ''तौबा–तौबा'' करके प्राण लेकर भागे जो प्राचीर तक पहुँचे उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया।

(3)

सूर्य छिप रहा था। पश्चिम दिशा लाल–लाल हो रही थी। राजकुमारी वहाँ चिंतित भाव से अति दूर पर्वत की उपत्यका में सूर्य को डूबते हुए देख रही थी। उसे चार दिन से पिता का संदेश नहीं मिला था। वह सोच रही थी कि इस समय पिता को क्या सहायता दी जा सकती है। वह एक बुर्ज के नीचे बैठ गई। धीरे–धीरे अंधकार बढ़ने लगा। उसने देखा, एक काली मूर्ति धीरे–धीरे पर्वत की तंग राह से किले की ओर अग्रसर हो रही है। उसने समझा, पिता का संदेश वाहक होगा। वह चुपचाप उत्सुक होकर उधर ही देखती रही। उसे आश्चर्य तब हुआ, जब उसने देखा, वह गुप्तद्वार की ओर न जाकर सिंहद्वार की ओर जा रहा है। तब अवश्य शत्रु है। राजकुमारी ने एक तीखा बाण हाथ में लिया और छिपती हुई उस मूर्ति के साथ ही द्वार की पौर के ऊपर आ गई।

वह मूर्ति एक गठरी को पीठ से उतार कर प्राचीर पर चढ़ने का उपाय सोच रही थी। राजकुमारी ने धनुष पर बाण चढ़ाकर ललकार कर कहा–

''वहीं खड़ा रह और अपना अभिप्राय कह।''

काल रूप राजकुमारी को सम्मुख देख वह व्यक्ति भयभीत स्वर में बोला–

''मुझे किले में आने दीजिए। बहुत जरूरी संदेश है।''

''वह संदेश वहीं से कह।''

''वह अतिशय गोपनीय है।''

''कुछ चिंता नहीं, कह।''

''मैं किले में आकर कहूँगा।''

''उससे प्रथम यह तीर तेरे कलेजे के पार हो जाएगा।''

''महाराज विपत्ति में हैं, मैं उनका चर हूँ।''

''चिट्ठी हो, तो फेंक दो।''

''जबानी कहना है।''

''जल्दी कह।''

''यहाँ से नहीं कह सकता।''

''तब ले''–राजकुमारी ने तीर छोड़ दिया। वह उसके कलेजे को पार करता हुआ निकल गया। राजकुमारी ने सीटी दी। दो सैनिक आ हाज़िर हुए। कुमारी की आज्ञा पा, रस्सी के सहारे उन्होंने नीचे जा मृत व्यक्ति को देखा यवन था। उसके एक व्यक्ति पीठ पर गठरी में बँधा था। यह देख राजकुमारी जोर से हँस पड़ी। इसके लिए ही वह प्रत्येक बुर्ज पर घूम–घूम कर प्रबंध और पहरे का निरीक्षण कर रही थी। फौरन फाटक पर जाकर देखा; द्वार रक्षक द्वार पर न था। कुमारी ने पुकार कर कहा–''यहाँ पहरे पर कौन है?''

एक वृद्ध योद्धा ने आगे बढ़कर राजकुमारी को मुजरा किया। उसने धीरे से कुमारी के कान में कुछ और भी कहा। वह हँसती–हँसती बोली–''ऐसा, ऐसा? अब वे तुम्हें घूस देंगे बाबा साहब?''

''हाँ, बेटी!''–बूढ़ा योद्धा तनिक हँस दिया। उसने गाँठ से सोने की पोटली निकालकर कहा–''यह

देखो, इतना सोना है।''

''अच्छी बात है, ठहरो। हम उन्हें पागल बना देंगे। बाबा साहब, तुम आधी रात को उसकी इच्छानुसार द्वार खोल देना।''

वृद्ध भी हँसता और सिर हिलाता हुआ चला गया।

बारह बज गए थे। चंद्रमा की चाँदनी छिटक रही थी। कुछ आदमी दुर्ग की ओर छिपे–छिपे आ रहे थे। उनका सरदार मालिक काफूर था। उनके पीछे सौ चुने हुए योद्धा थे। संकेत पाते ही द्वारपाल ने प्रतिज्ञा पूरी की। विशाल मेहराबदार फाटक खुल गया। सौ व्यक्ति चुपचाप दुर्ग में घुस गए। मलिक काफूर ने मंद स्वर में कहा–''यहाँ तक तो ठीक हुआ। अब हमें उस गुप्त मार्ग से दुर्ग के भीतर महलों में पहुँचा दो जिसका तुमने वादा किया है।''

राजपूत ने कहा–''मैं वादे का पक्का हूँ, मगर बाकी सोना तो दो।''

''यह लो।'' यवन सेनापति ने मुहरों की थैली हाथ में धर दी। राजपूत फाटक का ताला बंद कर चुपचाप प्राचीर की छाया में चला। वह लोमड़ी की भाँति चक्कर खाकर कहीं गायब हो गया।

यवन सैनिक चक्रव्यूह में फँस गए, न पीछे का रास्ता मिलता था न आगे का। वे वास्तव में कैद हो गए थे और अपनी मूर्खता पर पछता रहे थे। मलिक काफूर दाँत पीस रहा था। राजकुमारी की सहेलियाँ इतने चूहों को चूहेदानी में फँसाकर हँस रही थीं।

(4)

यवन सैन्य ने दुर्ग पर भारी घेरा डाल रखा था। खाद्य सामग्री धीरे–धीरे कम हो रही थी। घेरे के बीच से किसी का आना अशक्य था। राजपूत भूखों मर रहे थे। राजकुमारी का शरीर पीला हो गया था। उसके अंग शिथिल हो गए, पर नेत्रों का तेज वैसा ही था। उसे कैदियों के भोजन की बड़ी चिंता थी। किले का प्रत्येक आदमी उसे देवी की भाँति पूजता था। उसने मलिक काफूर के पास जाकर कहा–''यवन सेनापति, मुझे तुमसे कुछ परामर्श करना है, मैं विवश हो गई हूँ। दुर्ग में खाद्य सामग्री बहुत कम हो गई है, और मुझे यह संकोच हो रहा है कि आपकी कैसे अतिथि सेवा की जाए। अब कल से हम एक मुट्ठी अन्न लेंगे और आप

लोगों को दो मुट्ठी उस समय तक मिलेगा, जब तक कि अन्न दुर्ग में रहेगा, आगे ईश्वर मालिक है।''

मलिक काफूर की आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा ''राजकुमारी! मुझे यकीन है कि आप बीस किलों की हिफ़ाजत कर सकती हैं।''

''हाँ, यदि मेरे पास रसद हो तो।''

राजकुमारी चली गई।

अट्ठारह सप्ताह बीत गए। अलाउद्दीन के गुप्तचर ने आकर शाह को कोर्निस की।

''क्या? राजकुमारी रत्नावती किला देने को तैयार.....!''

''नहीं खुदाबंद, वहाँ किसी तरकीब से रसद पहुँच गई है। अब किला, नौ महीने पड़े रहने पर भी हाथ न आएगा। फिर शाही फौज के लिए पानी अब किसी तालाब में नहीं है।''

''और क्या खबर है?''

''रत्नसिंह ने मालवे तक शाही सेना को खदेड़ दिया है।''

अलाउद्दीन हत्बुद्धि हो गया और महाराज से संधि का प्रस्ताव किया।

सुंदर प्रभात था। राजकुमारी ने दुर्ग प्राचीर पर खड़े होकर देखा, शाही सेना डेरे–डंडे उखाड़कर जा रही है और महाराज रत्नसिंह अपने सूर्यमुखी झंडे फहराते, विजयी राजपूतों के साथ दुर्ग की ओर आ रहे हैं।

मंगल कलश सजे थे। बाजे बज रहे थे। दुर्ग में प्रत्येक वीर को पुरस्कार मिल रहा था। मलिक काफूर महाराज की बगल में बैठे थे।

महाराज ने कहा–''खाँ साहब! किले में मेरी गैरहाज़री में आपको तकलीफ और असुविधाएँ हुई होंगी, इसके लिए आप माफ करेंगे। युद्ध के नियम सख्त होते हैं फिर किले पर भारी मुसीबत आ गई थी। लड़की अकेली थी, जो बन सका, किया।''

मलिक काफूर ने कहा–''महाराज! राजकुमारी तो पूजने लायक है, इंसान नहीं, फरिश्ता है। मैं ताजिंदगी इनकी मेहरबानी नहीं भूल सकता।''

महाराज ने एक बहुमूल्य सरपेच दिया और पान का बीड़ा देकर विदा किया।

दुर्ग में धौंसा बज रहा था।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

शब्दार्थ

दुर्गाधिपति	–	दुर्ग के मालिक (राजा)	धूर्त	–	धोखेबाज
विलीन	–	लुप्त	उपत्यका	–	पहाड़ी के नीचे की भूमि
घूस	–	रिश्वत	जय निनाद	–	जय ध्वनि
कोर्निस	–	झुककर सलाम करना			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. राजकुमारी का नाम क्या था?
2. दुर्ग को किसकी सेना ने घेर रखा था ?
3. राजकुमारी के पिता का क्या नाम था?

लिखें

निम्नलिखित वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर सही वाक्य पर (✓) और गलत वाक्य पर (×) का निशान लगाइए–

1. जैसलमेर के दुर्गाधिपति महाराज रत्नसिंह थे। ( )
2. "बेटी तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है" ये शब्द बुजुर्ग सैनिक ने कहे। ( )
3. राजकुमारी ने जिसे मार गिराया, वह मृत व्यक्ति यवन था। ( )
4. बुजुर्ग को गद्दारी करने के लिए सोने का प्रलोभन दिया था। ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजकुमारी की तुलना किससे की गई है?
2. मलिक काफूर कौन था?
3. राजकुमारी के सम्मुख उनके पिता के संदेश वाहक के रूप में कौन आया था?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ में दुश्मन को किन–किन उपनामों से पुकारा गया है?
2. यवनों के आक्रमण का राजकुमारी द्वारा किए गए उपहास का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
3. मलिक काफूर ने बुजुर्ग सैनिक को रिश्वत क्यों दी थी?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

2. राजकुमारी के रण कौशल का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. ''राजकुमारी रत्नावती दुश्मनों के दाँत खट्टे कर रही थी'' यहाँ 'दाँत खट्टे करना' एक मुहावरा है। पाठ में आए मुहावरों को छाँटकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. **जिस सामासिक पद के दोनों पदों में विशेषण–विशेष्य या उपमान–उपमेय का संबंध हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।**

   जैसे – महाराज = महान है जो राजा।

   आप कर्मधारय समास के पाँच उदाहरण लिखिए।

3. यवन सैनिक घोड़े पर बैठकर आया; पर किले का दरवाज़ा बंद था। जैसे ही उसने दरवाज़ा खटखटाया, चिड़िया पर फड़फड़ाकर उड़ गई। उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द 'पर' का प्रयोग तीन अलग–अलग अर्थों में हुआ है। आप भी ऐसे वाक्य बनाइए जिसमें एक शब्द का प्रयोग बार–बार हुआ हो और अर्थ हर बार अलग–अलग हो।

4. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए।

   बुजुर्ग, सैनिक, प्राचीर, सूर्य, द्वारा, चीत्कार, दाँत, दंग, दुःख

पाठ से आगे

1. जैसलमेर के दुर्ग के बारे में और भी जानकारी एकत्र करके लिखिए।
2. जैसलमेर को किन–किन नामों से जाना जाता है? पता लगाकर लिखिए।
3. दुर्ग के अलावा जैसलमेर में और कौन–कौनसे दर्शनीय स्थल हैं? सूची बनाइए।

कल्पना कीजिए

आप सर्दी की छुट्टियों में जैसलमेर अपने परिवार के साथ भ्रमण पर गए। आपने वहाँ क्या–क्या देखा? अपने शब्दों में यात्रा वृत्तांत लिखिए।

सृजन

दीयासलाई की तूलिकाओं की मदद से आप भी दुर्ग के मॉडल का सृजन कर सकते हैं। आवश्यक सामग्री थर्माकॉल शीट, सफेद ड्राइंग शीट, रंग (पानी वाले), ब्रुश, माचिस की तूलिकाएँ आदि।

खोज–बीन

आपने ''जैसलमेर की राजकुमारी'' के साहस की कहानी इस पाठ में पढ़ी। ऐसी ही साहस की कहानियाँ पुस्तकालय में पढ़िए।

संकलन

राजस्थान की गौरवगाथा एवं पराक्रम की घटनाओं का पता लगाकर 'मेरा संकलन' में लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

खाद्य, उद्धरण, खट्टे, चिट्ठी

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''वीर पुरुष रोग–शैय्या पर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना पसन्द करता है।''